

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम *The Tribune*
दिनांक 16.4.2019 पृष्ठ सं. 4 कॉलम 1-2

HAU, Netherlands to work on crop residue management

DEEPENDER DESWAL

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, APRIL 15

+ Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) and the Netherlands have joined hands to work on a project to tackle problems faced in management of paddy straw in the state.

A four-member delegation led by Siebe Schuur, counsellor for agriculture, nature and food quality, from the embassy of the Netherlands in India, came to the university and called on Prof K P Singh, Vice-Chancellor of HAU. Siebe assured the university of support in its efforts for the management of crop residue, particularly paddy straw. He said the Dutch companies were eager to invest in India and also appreciated the efforts of the university in sorting

out the issue of paddy straw in the state.

The paddy straw management is a serious problem in Haryana, Punjab and Uttar Pradesh. Due to lack of appropriate technology and methods, farmers are forced to burn the paddy straw which creates the problem of environmental pollution. However, the HAU is seriously working for providing simple and economical options to the farmers for safeguarding the environment as well as the management of paddy straw. The university has also got a project worth Rs 4 crore from the Indian Council of Agricultural Research (ICAR) to develop suitable technologies for crop residue management and popularise the available methods and machinery among the farmers.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम The Hindustan Times
दिनांक 16.4.2019 पृष्ठ सं. 2 कॉलम 8

Netherlands to tie up with Hisar varsity for paddy straw mgmt

HT Correspondent

■ letterschd@hindustantimes.com

HISAR : The Netherlands will cooperate with Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (CCS HAU) in its efforts for management of paddy straw in Haryana, a four-member delegation led by Siebe Schuur, counsellor for agriculture, nature and food quality from the embassy of the Netherlands in India, said on Monday. The delegation met university vice-chancellor KP Singh and said companies in Netherlands are eager to invest in India in the project related to paddy straw management. Paddy burning is a critical issue in states such as Haryana, Punjab and Uttar Pradesh where every year, the air quality index gets affected due to stubble burning.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम आभृत समाचार
दिनांक 16.4.2019 : पृष्ठ सं. 6 कॉलम 4-8

नीदरलैंड्स के चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने किया एवं एय का दौरा, कलपति प्रो. केपी सिंह से की मुलाकात, संयुक्त समूह का गठन किया

धन की पराली के प्रबंधन में एचएयू का सहयोग करेगा नीदरलैंड्स

अमर उजाला छवी

हिसाब। औरपी भरन मिंग हरियाणा कृषि विविधतालय द्वारा इन की प्रशंसन की प्रत्येक दिशा में किए जा रहे कार्य ने नीटलैंड्स समर्थन करेगा। नीटलैंड्स के पारंपर में दृष्टिकोण से कृषि, प्रकृति और साथ जगतका केंद्रस्थल स्थीत गृह द्वारा नेतृत्व में चार सदस्यीय नीटलैंड्सिल हरियाणा कृषि

प्रार्थनाविधानादाता अधिकारी। प्रार्थनाविधानादाता को बुद्धिमत्ता और कौटुम्बिक सम्बन्धों से जुड़ी विषयों में ज्ञान की ओर आवश्यकता है। उन्होंने नियमित रूप से विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञता वाले विद्युत विद्यार्थियों से विचारणा की है। उन्होंने विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञता वाले विद्युत विद्यार्थियों से विचारणा की है। उन्होंने विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञता वाले विद्युत विद्यार्थियों से विचारणा की है।



प्रतिक्रिया के दीर्घी पौरी तिथि से समाप्त होने वाली धारणी के प्रधानमंत्री विषयक को लेकर दीर्घी पांच अवधि नीतिव्यवस्था का प्रतिनिधिमंडल।

आनंद कृष्णन और दो हिन्दू वेनिपत्र या मारन समझते हैं। हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश में पहाड़ी की गंधीर समस्या : भान को खोली करने वाले हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश राज्यों में धान की पराली के प्रबंधन की गंधीर समस्या है। उत्तर प्रदेशीयोंको यह सिवियों उत्तराखण्ड न देने के चलते किसान धान की विकासी और जलाने के लिए मारना भी जाता है।

जिससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या नियंत्रित होती है। पर्यावरण की सुधारा और किसानों को ज्ञान की पारंपरी प्रवृक्षक के लिए सरल और किसानीयी विकास देने के लिए हरियाणा कृषि विवरणियालय गोपीनाथ से कार्य कर रहा है। इस विवरणियालय को कफालत अवश्य प्राप्तिकरण के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी विकासित करने और इस कार्य के लिए किसान उपलब्ध और योग्य विद्यार्थी व विद्यार्थी को विद्यालयों में अनुसूचित करने के लिए भारतीय कृषि अनुसूचितान परिषद् में चार कारोड़ रुपये की परिवर्तनाना भी वित्ती है। यहाँ यह भी सत्ता ने कि ज्ञान की पारंपरी के सम्बन्धी समाजान की दिशा में हरियाणा कृषि विवरणियालय और भारत में नीटरलैन्स ग्रुपका एक सामय कार्य कर रहे हैं। इसके लिए विभिन्न दित्तधारों से समय समय संघर्ष लघू का गठन करा गया है। इसमा आमा के लिए भी नीटरलैन्स

दूसरावां में इस विषय को लेकर बैठक भी हो। तीन दिन बारी इस बैठक में हरिहरलाल कुमार विश्वविद्यालय से अनुसंधान दिनांक दिया गया। एसके सहारावां पक्ष ईंटीनीवर्टिंग कालेज के द्वारा दी गई आवेदन द्वारा दी गई सही विषय विवेचन दी गई थी। युक्ता डा. मुकेश जैन, डा. यदोविका और डा. कमला महिला हासिल हुए थे। इनके अतिरिक्त भारत के कई संस्कृणिक और अनुसंधान संस्थानों ने भी ईंटीनीविट्रिटमेंट अंक प्रैक्टिशन, स्टेट्स पापर एंड पेपर विश्व ईंटीनीविट्रिटमेंट भारतीय पेपर उद्योग, भारतीय दृष्टि उद्योग एवं इस बैठकें में भाग लिया। नोटरेंडरेस के प्रतिनिधिमंडल ने हाफविं के अधिकारियों, फैक्टरी और विधायिकों के साथ भी बातचीत की ओर संयुक्त काम से विषय जाने वाले ईंटीक और अनुसंधान कार्यों का चरा लगाया। इस प्रतिनिधिमंडल ने हरिहरलाल कुमार विश्वविद्यालय में विभिन्न स्थानों पर और स्वतंत्रताओं का दैरा खड़ा किया और यहां जारी प्रतिनिधियों में उभय दिवारी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

द्वारा-भूमि

समाचार-पत्र का नाम

दिनांक 16.4.2011 पृष्ठ सं. 12 कॉलम 2-6

हकूमि में पहुंचा चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल

पराली प्रबंधन में हकूमि की गदद करेगा नीदरलैंड, निवेश को तैयार

- कहा, नीदरलैंड की कंपनियां धान की पराली प्रबंधन से संबंधित परियोजना में भारत में निवेश करने के लिए उत्सुक

हरियाणा न्यूज़ ||| हिसार



हिसार। हकूमि कुलपति प्रो. केपी सिंह के साथ बैठक में उपस्थित नीदरलैंड प्रतिनिधिमंडल के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

हकूमि द्वारा धान की पराली के प्रबंधन की दिशा में किए जा रहे कार्य में नीदरलैंड सहयोग करेगा। नीदरलैंड के भारत में दूतावास से कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के काउंसलर सीबे शूर ने नेतृत्व में चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल हकूमि आया।

इस प्रतिनिधिमंडल ने कुलपति प्रो. केपी सिंह से मुलाकात की। इस अवसर पर सीबे ने इस विश्वविद्यालय द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन विशेषकर धान की पराली के प्रबंधन हेतु किए जा रहे प्रयास में

पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा, नीदरलैंड की कंपनियां धान की पराली प्रबंधन से संबंधित परियोजना में भारत में निवेश करने के लिए उत्सुक हैं।

प्रतिनिधिमंडल में कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के डिप्टी काउंसलर आनंद कृष्ण और दो इंटर्न डॉनियल व मारन शामिल थे। हकूमि को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् से

चार करोड़ रुपए की एक परियोजना भी मिली है। धान की पराली के स्थायी समाधान की दिशा में हकूमि और भारत में नीदरलैंड से दूतावास एक साथ काम कर रहे हैं।

संयुक्त संगठन का किया गठन

पराली प्रबंधन के हितधारकों के साथ एक संयुक्त समूह का गठन किया गया है। जिसने इस माह के

शुरू में नीदरलैंड से दूतावास में इस विषय को लेकर बैठक भी की।

बैठक में यह हुए शामिल

तीन दिन चली इस बैठक में हकूमि से अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत, कृषि इंजीनियरिंग कालेज के डॉन डॉ. आरके झोरड़, डॉ. रवि गुप्ता, डॉ. मुकेश जैन, डॉ. यादविका और डॉ. कमला मलिक शामिल हुए थे। इनके अतिरिक्त भारत के कई

हरियाणा-पंजाब में संगठन

दाल लौ डोरी करने वाले हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश राज्यों में धान की पराली के प्रबंधन की डॉनियल उमस्त्या है। उक्त प्रौद्योगिकीय विद्यियों उपलब्ध व होले के छालों किस्तल धान वाली पराली तथे जल्दी के लिए मजबूर हो जाते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उड़ा जाती है।

शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों जैसे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग, सेट्रल पल्प एंड पेपर रिसर्च इंस्टीट्यूट भारतीय पेपर उद्योग, भारतीय एग्रो उद्योग ने भी बैठक में भाग लिया।

इस अवसर पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों एवं अनुसंधान समूहों ने अपनी प्रौद्योगिकियों को साझा किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम

सिंह जाइरा

दिनांक 16.4.2019

पृष्ठ सं. 19

कॉलम 1-4

योजना

देश में पराली प्रबंधन की परियोजनाओं में निवेश करेंगी नीदरलैंड की कंपनियां

नीदरलैंड दूतावास के अधिकारी पहुंचे एचएयू

जागरण संघादाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की तरफ से धान की पराली के प्रबंधन की दिशा में किए जा रहे कार्य में नीदरलैंड सहयोग करेगा। नीदरलैंड के भारत में दूतावास से कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के काउंसलर श्रीसीबे शूटर के नेतृत्व में चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय आया। इस प्रतिनिधिमंडल ने कुलपति प्रौ. केपी सिंह से मुलाकात की। इस अवसर पर श्रीसीबे ने इस विश्वविद्यालय की ओर से फसल अवशेष प्रबंधन विशेषकर धान की पराली के प्रबंधन के लिए किए जा रहे प्रयास में पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा नीदरलैंड की कंपनियां धान की पराली प्रबंधन से संबंधित परियोजना में भारत में निवेश करने के लिए उत्सुक हैं। श्रीसीबे के नेतृत्व में यह आए प्रतिनिधिमंडल में कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के



कुलपति प्रौ. केपी सिंह के साथ बैठक में उपस्थित नीदरलैंड प्रतिनिधिमंडल के सदस्य।

डिटी काउंसलर आनंद कृष्णन, डैनियल और मारन शामिल थे।

पराली पर एचएयू और नीदरलैंड दूतावास एक साथ कर रहे काम : धान की पराली के स्थायी समाधान की दिशा में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और भारत में नीदरलैंड दूतावास एक साथ काम कर रहे हैं। इसके लिए विभिन्न हितधारकों के साथ एक संयुक्त

समूह का गठन किया गया है, जिसने इस माह के शुरू में नीदरलैंड दूतावास में इप विषय को लेकर बैठक भी की। तीन दिन चली इस बैठक में एचएयू से अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत, कृषि इंजीनियरिंग कालेज के डीन डा. आरके झोरड़ सहित विषय विशेषज्ञ डा. गवि गुप्ता, डा. मुकेश जैन, डा. यादविका और डा. कमला मलिक शामिल हुए थे।

मिली 4 करोड़ की परियोजना
धान की खेती करने वाले हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश राज्यों में धान की पराली के प्रबंधन की गंभीर समस्या है। उचित प्रौद्योगिकी या विधियां उपलब्ध न होने के चलते किसान धान की पराली को जलाने के लिए मजबूर हो जाते हैं, जिससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पैदा होती है।

इनके अतिरिक्त भारत के कई शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों जैसे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग, सेंट्रल पल्प एंड पेपर रिसर्च इंस्टीट्यूट भारतीय पेपर उद्योग, भारतीय एंड उद्योग ने भी इस बैठक में भाग लिया। इस अवसर पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों एवं अनुसंधान समूहों ने अपनी प्रौद्योगिकियों को साझा किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम गृन कृ मास्कर
दिनांक 16. 4. 2019. पृष्ठ सं. 3 कॉलम 1-7

एचएयू के साथ पराली प्रबंधन पर काम के लिए नीदरलैंड की कंपनियां निवेश को तैयार

तीन दिन तक नीदरलैंड के पदाधिकारियों के साथ एचएयू में चली हाईलेवल बैठक

भास्कर न्दुज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय डायरेक्टर धान की पराली के प्रबंधन के लिए किया जा रहे कार्य में नीदरलैंडस महाबोग करेराह। नीदरलैंडस के भारत में दूतावास से कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के काउंसलर सौबंध शुरू के नेतृत्व में चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय आया। इस प्रतिनिधिमंडल ने कुलपति प्रो. केपो सिंह से मुलाकात की।

इस अवसर पर सीधे ने इस एचएयू डायरेक्टर धान की पराली के प्रबंधन के लिए किया जा रहे प्रयास में पूरा महाबोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि नीदरलैंडस की कृषि विश्वविद्यालय की पराली प्रबंधन से संबंधित परियोजनाएँ भारत में निवेश करने के लिए उत्तम है। उन्होंने हरियाणा में धान की पराली की समस्या को हल करने के लिए कुलपति की पहल, दूसरी और तीसरी विश्वविद्यालय की समस्या की। इस प्रतिनिधिमंडल में कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के डिटोर्न काउंसलर आवंट कृष्णन और दो इंटर्न ईनियल व मारन शामिल रहे। तीन दिन चली बैठक में एचएयू से अनुसंधान निवेशक डॉ. एसके महरावत, कृषि ईनियरिंग कालेज के डॉन डॉ. आरके झोरड़ सहित विषय विशेषज्ञ डॉ. रवि गुला, डॉ. मुकेश जैन, डॉ. यादविका और डॉ. कमला मरिक शामिल रहे।



पहली प्रबंधन पर नीदरलैंड के प्रतिनिधियों से बातचीत करते हुए हरियाणा प्रशासक चरण यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ केपो सिंह।

इन संस्थानों ने हिस्सा लिया

इनके अतिरिक्त भारत के कई राज्याधिकारी और अनुसंधान संस्थानों ने भी इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ऐक्योजिन, सेंट्रल चॉप एंड पेपर रिसर्च इंस्टीट्यूट भारतीय पेपर उद्योग, भारतीय एग्रो उद्योग ने भी इस बैठक में हिस्सा लिया। इस अवसर पर अनेक अंतरराष्ट्रीय कौर्सियों एवं अनुसंधान समूहों ने अपनी प्रौद्योगिकीयों को सज्जा किया।

पराली प्रबंधन वर्यो जरूरी

धान की खेती करने वाले हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश यज्ञ में पराली के प्रबंधन की गंभीर समस्या है। उचित प्रौद्योगिकी या विधियों उपलब्ध न होने के चलते किसान धान की पराली की जलाने के लिए मजबूर हो जाते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या निपटा जाती है। पर्यावरण की सुरक्षा और विस्थानों को धान की पराली प्रबंधन के लिए सरल और किसायती विकल्प देने के लिए एचएयू प्रयत्न कर रही है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम पंजाब के सरी
दिनांक .16.4.2019. पृष्ठ सं. ३ कॉलम ... ३-५

एच.ए.यू. द्वारा धान की पराली के प्रबंधन के लिए अब नीदरलैंड करेगा सहयोग



कुलपति प्रो. के. पी. सिंह के साथ बैठक में उपस्थित नीदरलैंड प्रतिनिधिमंडल के सदस्य।

हिसार, 15 अप्रैल (ब्लूरो): नीदरलैंड के भारत में दूतावास से कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के काऊंसलर सीबे शूटर के नेतृत्व में 4 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आया। इस प्रतिनिधिमंडल ने कुलपति प्रो. के.पी. सिंह से मुलाकात की। इस अवसर पर सीबे ने इस विश्वविद्यालय द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन विशेषकर धान की पराली के प्रबंधन हेतु किए जा रहे

प्रयास में पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा नीदरलैंड स की कंपनियां धान की पराली प्रबंधन से संबंधित परियोजना में भारत में निवेश करने के लिए उत्सुक हैं।

सीबे के नेतृत्व में यहां आए इस प्रतिनिधिमंडल में कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के डिप्टी काऊंसलर आनंद कृष्णन और 2 इंटर्न डैनियल व मारन शामिल थे। धान की पराली के स्थायी समाधान की दिशा में हरियाणा

कृषि विश्वविद्यालय और भारत में नीदरलैंडस दूतावास एक साथ काम कर रहे हैं। इसके लिए विभिन्न हितधारकों के साथ एक संयुक्त समूह का गठन किया गया है जिसने इस माह के शुरू में नीदरलैंडस दूतावास में इस विषय को लेकर बैठक भी की। 3 दिन चली इस बैठक में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, कृषि इंजीनियरिंग कालेज के डीन डॉ. आर.के. झोरड़ सहित विषय विशेषज्ञ डा. रवि गुप्ता, डा. मुकेश जैन, डा. यादविका और डा. कमला मलिक शामिल हुए थे। इनके अतिरिक्त भारत के कई शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों जैसे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग, सैंट्रल पल्ट्य एंड पेपर रिसर्च इंस्टीच्यूट भारतीय पेपर उद्योग, भारतीय एग्री उद्योग ने भी इस बैठक में भाग लिया। इस अवसर पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों एवं अनुसंधान समूहोंने अपनी प्रौद्योगिकियों को साझा किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम १२५ घोर
दिनांक १६.६.२०१९ पृष्ठ सं. ३ कॉलम ६-८

धान की पराली के प्रबंधन की दिशा में हक्कुवि को सहयोग देगा नीदरलैंड्स



हिसार/15 अप्रैल/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा धान की पराली के प्रबंधन की दिशा में किए जा रहे कार्य में नीदरलैंड्स सहयोग करेगा। नीदरलैंड्स के भारत में दूतावास से कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के कांक्सलर सीबे शूर के नेतृत्व में चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल विश्वविद्यालय आया। इस अवसर पर सीबे ने इस विश्वविद्यालय द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन विशेषकर धान की पराली के प्रबंधन हेतु किए जा रहे प्रयास में पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा नीदरलैंड्स की कंपनियां धान की पराली प्रबंधन से संबंधित परियोजना में भारत में निवेश करने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने हरियाणा में धान की पराली की समस्या को हल करने के लिए कुलपति प्रो. केपी सिंह की पहल, दूरदर्शिता और प्रतिबद्धता की प्रशंसा की। सीबे के नेतृत्व में यहां आए इस प्रतिनिधिमंडल में कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के डिप्टी कांक्सलर आनंद कृष्णन और दो इंटर्न डैनियल व मारन शामिल थे। उल्लेखनीय है कि धान की

खेती करने वाले हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश राज्यों में धान की पराली के प्रबंधन की गंभीर समस्या है। उचित प्रौद्योगिकी या विधियां उपलब्ध न होने के चलते किसान धान की पराली को जलाने के लिए मजबूर हो जाते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पैदा हो जाती है। पर्यावरण की सुरक्षा और किसानों को धान की पराली प्रबंधन के लिए सरल और किफायती विकल्प देने के लिए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. केपी सिंह के मार्गदर्शन में गंभीरता से कार्य कर रहा है। इस विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी विकसित करने और इस कार्य के लिए फिलाहाल उपलब्ध विधियों और मशीनों व यंत्रों को किसानों में लोकप्रिय बनाने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् से चार करोड़ रुपए की एक परियोजना भी मिली है। यहां यह भी बता दें कि धान की पराली के स्थायी समाधान की दिशा में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और भारत में नीदरलैंड्स दूतावास एक साथ काम कर रहे हैं। इसके लिए

विभिन्न हितधारकों के साथ एक संयुक्त समूह का गठन किया गया है जिसने इस माह के शुरू में नीदरलैंड्स दूतावास में इस विषय को लेकर बैठक भी की। तीन दिन चली इस बैठक में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहायता, कृषि इंजीनियरिंग कालेज के डीन डॉ. आरके झोरड सहित विषय विशेषज्ञ डॉ. रवि गुप्ता, डॉ. मुकेश जैन, डॉ. यादविका और डॉ. कमला मलिक शामिल हुए थे। इनके अतिरिक्त भारत के कई शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों जैसे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग, सेंट्रल पल्स एंड पेपर रिसर्च इंस्टीट्यूट भारतीय पेपर उद्योग, भारतीय एग्रो उद्योग ने भी इस बैठक में भाग लिया। इस अवसर पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों एवं अनुसंधान समूहों ने अपनी प्रौद्योगिकियों को साझा किया। इस बैठक पर नीदरलैंड्स के प्रतिनिधिमंडल ने हक्कुवि के अधिकारियों, फैकल्टी और विद्यार्थियों के साथ भी बातचीत की और संयुक्त रूप से किए जाने वाले शैक्षणिक और अनुसंधान कार्यों का पता लगाया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम

नित्य कृषि २०२४

दिनांक १५.५.२०१९.

पृष्ठ सं.

कॉलम १-३

पराली प्रबंधन की दिशा में किए जा रहे कार्य में नीदरलैंड करेगा हक्की का सहयोग

हिसार, 15 अप्रैल (निस)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा धान की पराली के प्रबंधन की दिशा में किए जा रहे कार्य में नीदरलैंडस सहयोग करेगा। नीदरलैंडस के भारत में दूतावास से कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के काउंसलर श्री सीबे शूडर के नेतृत्व में चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय आया। इस प्रतिनिधिमंडल ने कुलपति प्रो. के. पी. सिंह से मुलाकात की।

इस अवसर पर श्री सीबे ने इस विश्वविद्यालय द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन विशेषकर धान की पराली के प्रबंधन हेतु किए जा रहे प्रयास में पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा नीदरलैंडस की कंपनियां धान की पराली प्रबंधन से संबंधित परियोजना में भारत में निवेश करने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने हरियाणा में धान की पराली की समस्या को हल करने के लिए कुलपति प्रो. केपी सिंह की पहल, दूरदर्शिता और प्रतिबद्धता की प्रशंसा की।

श्री सीबे के नेतृत्व में यहां आए इस प्रतिनिधिमंडल में कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के डिटी काउंसलर आनंद कृष्णन और दो इंटर्न डैनियल व सुश्री मारन शामिल थे। उल्लेखनीय है कि धान की खेती करने वाले



हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश राज्यों में धान की पराली के प्रबंधन की गंभीर समस्या है। उचित प्रौद्योगिकी या विधियां उपलब्ध न होने के चलते किसान धान की पराली को जलाने के लिए मजबूर हो जाते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पैदा हो जाती है। पर्यावरण की सुरक्षा और किसानों को धान की पराली प्रबंधन के लिए सरल और किफायती विकल्प देने के लिए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. केपी सिंह के मार्गदर्शन में गंभीरता से कार्य कर रहा है। इस विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी विकसित करने और इस कार्य के लिए फिलहाल उपलब्ध विधियों और मशीनों व यंत्रों को किसानों में लोकप्रिय बनाने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् से चार करोड़ रुपए की एक परियोजना भी मिली है।

यहां यह भी बता दें कि धान की पराली के स्थायी समाधान की दिशा में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और भारत में नीदरलैंडस दूतावास एक साथ काम कर रहे हैं। इसके लिए विभिन्न

हितधारकों के साथ एक संयुक्त समूह का गठन किया गया है जिसने इस माह के शुरू में नीदरलैंडस दूतावास में इस विषय को लेकर बैठक भी की। तीन दिन चली इस बैठक में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, कृषि इंजीनियरिंग कालेज के डीन डॉ. आर.के. झोरड़ सहित विषय विशेषज्ञ डॉ. रवि गुप्ता, डॉ. मुकेश जैन, डॉ. यादविका और डॉ. कमला मलिक शामिल हुए थे। इनके अतिरिक्त भारत के कई शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों जैसे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग, सेंट्रल पल्प एंड पेपर रिसर्च इंस्टीट्यूट भारतीय पेपर उद्योग, भारतीय एंड्रोड उद्योग ने भी इस बैठक में भाग लिया। इस अवसर पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों एवं अनुसंधान समूहों ने अपनी प्रौद्योगिकियों को साझा किया। इस मौके पर नीदरलैंडस के प्रतिनिधिमंडल ने हक्की के अधिकारियों, फैकल्टी और विद्यार्थियों के साथ भी बातचीत की और संयुक्त रूप से किए जाने वाले शैक्षक और अनुसंधान कार्यों का पता लगाया। इस प्रतिनिधिमंडल ने हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न सुविधाओं और सरंचनाओं का दौरा किया और यहां जारी गतिविधियों में रुचि दिखाई।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम हैलीटिस्ट
दिनांक १५-६-२०१९ पृष्ठ सं. ५ कॉलम ७-८

हक्कि के पराली प्रबंधन पर नीदरलैंडस सहयोग करेगा

हिसार : 15
अप्रैल चौधरी
चरण सिंह
हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय



द्वारा धान की पराली के प्रबंधन की दिशा में किए जा रहे कार्य में नीदरलैंडस सहयोग करेगा। नीदरलैंडस के भारत में दूतावास से कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के काड़सलर श्री सीबे शुडर के नेतृत्व में चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय आया। इस प्रतिनिधिमंडल ने कुलपति प्रो. के. पी. सिंह से मुलाकात की। इस अवसर पर श्री सीबे ने इस विश्वविद्यालय द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन विशेषकर धान की पराली के प्रबंधन हेतु किए जा रहे प्रयास में पूरा

सहयोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा नीदरलैंडस की कंपनियां धान की पराली प्रबंधन से संबंधित परियोजना में भारत में निवेश करने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने हरियाणा में धान की पराली की समस्या को हल करने के लिए कुलपति प्रो. के. पी. सिंह की पहल, दूरदर्शिता और प्रतिबद्धता की प्रशংসा की। श्री सीबे के नेतृत्व में यहां आए इस प्रतिनिधिमंडल में कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के डिप्टी काड़सलर श्री आनंद कृष्णन और दो इंटर्न श्री डैनियल व सुश्री मारन शामिल थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम
दिनांक ।.५.।.६.।.२०१९ पृष्ठ सं. २ कॉलम ।-५

पराली प्रबंधन की दिशा में नीदरलैंड करेगा हरियाणा कृषि विविध का सहयोग

सिटी पास न्यूट, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा धान की पराली के प्रबंधन की दिशा में किए जा रहे कार्य में नीदरलैंडस सहयोग करेगा। नीदरलैंडस के भारत में दूतावास से कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के काउन्सल सीई शूटर के नेतृत्व में चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय आया। इस प्रतिनिधिमंडल ने कुलपति प्रो. केपी सिंह से मुलाकात की। इस अवसर पर भी सीधे ने इस विश्वविद्यालय द्वारा फसल अवधीय प्रबंधन विशेषक धान की पराली के प्रबंधन के लिए किए जा रहे प्रयोग में पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा नीदरलैंडस की कंपनियों धान की पराली प्रबंधन से संबंधित परियोजना में भारत में नियोक्त करने के लिए उत्सुक है। उन्होंने हरियाणा में धान की पराली की समस्या को हल करने के लिए कुलपति प्रो. केपी सिंह की पहल, दूरदृश्यता और प्रतिनिधित्व की प्रशंसन की।

सीधे के नेतृत्व में यहां आए इस प्रतिनिधिमंडल में कृषि, प्रकृति और खाद्य गुणवत्ता के डिप्टी काउन्सलर अनंद कुमार और दो इंटर्न वैज्ञानिक य सुनील मारन शामिल थे।

उल्लेखनीय है कि धान की खेती करने वाले हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश राज्यों में धान की पराली के प्रबंधन की गंभीर समस्या है। उचित प्रौद्योगिकी या विधियां उपलब्ध न होने के बल्कि किसान धान की पराली को



हिसार। कुलपति प्रो. केपी सिंह के साथ बैठक में उपरिकृत नीदरलैंडस प्रतिनिधिमंडल के सदस्य।

जलने के लिए मजबूर हो जाते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ऐदा हो जाता है। पर्यावरण की सुरक्षा और किसानों को धान वर्षी पराली प्रबंधन के लिए साल और किसानती विकास करने के लिए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. केपी सिंह के मार्गदर्शन में गमीरता से कार्य कर रहा है। इस विश्वविद्यालय को फसल अवधीय प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी विकास करने और इस कार्य के लिए फिलहाल उपलब्ध विधियों और मस्तिनों व यांत्रों को किसानों में होकरिय बनाने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् से चार करोड़ रुपए परीक्षण की योग्यता दी गयी है।

उन्होंने बताया कि धान की पराली को

के स्थायी समाधान की दिशा में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और भारत में नीदरलैंडस दूतावास पक्का साथ कराए रखे हैं। इसके लिए विभिन्न हितधारकों के साथ एक संयुक्त समूह का गठन किया गया है जिसने इस मह के शुरू में नीदरलैंडस दूतावास में इस विषय को लेकर बैठक भी की। तीन दिन बाले इस बैठक में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से अनुसंधान निदेशक डॉ. पराके सहयोग, कृषि इंजीनियरिंग कालेज के डॉन डॉ. आके झोड़ रहित विषय विदेशी डॉ. रघुवी गुरु, डॉ. मुकेश जैन, डॉ. वालिका और डॉ. कमला मलिक शामिल हुए थे। इनके अतिरिक्त भारत के कई रीचार्किंग और अनुसंधान संस्थानों जैसे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ

प्रैक्टिशन, सेंट्रल पल्य एंड पेपर रिसर्च इंस्टीट्यूट भारतीय पेपर उद्योग, भारतीय पाँड उद्योग ने भी इस बैठक में भाग लिया। इस अवसर पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अनुसंधान समूहों ने अपने प्रौद्योगिकियों को सज्जा किया।

इस मीके पर नीदरलैंडस के प्रतिनिधिमंडल ने हक्कि के अधिकारियों, फैकल्टी और विद्यार्थियों के साथ भी बातचीत की और संयुक्त रूप से किए जाने वाले रीचार्किंग और अनुसंधान कार्यों का पता लगाया। इस प्रतिनिधिमंडल ने हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न सुविधाओं और संरचनाओं का दैरा किया और यहां जारी गतिविधियों में रुचि दियाई।